श्रीकान्त वर्मा की कविता में जीवन - दृष्टि और साहित्यिक -दृष्टि:-

डॉ० बी०आर०ठाकुर (प्राध्यापक हिन्दी)

देवता देवी महिला महाविद्यालय बघौचघाट अहिरौली, देवरिया

सन् 1956 में नागपुर विश्वविद्यालय से एम०ए०के बाद श्रीकान्त वर्मा ने अपना साहित्यिक जीवन नई दिल्ली से आरम्भ किया। नई दिशा' और 'कृति' जैसी पत्रिकाओं का सम्पादन किया। कई वर्ष स्वतन्त्र लेखन के बाद 1964 में 'टाइम्स ऑफ इण्डिया ' संस्थान में नियुक्ति हुई जहाँ वे काफी लम्बे अरसे तक समाचार साप्ताहिक 'दिननमान' के विशेष संवाददाता रहे ।

.

. भटका मेघ, दिनारम्भ मायादर्पण (कविताएँ), मगध जलसाघर (1973), साहित्य आकादमी पुरस्कार, गरुण किसने देखा (काव्य संग्रह). झाड़ी संवाद (कहानियाँ), दूसरी बार (उपन्यास) जिरह (आलोचना), बीसवीं शताब्दी के अंन्धेरे में (साक्षात्कार), प्रसंग (विविध लेखन), फॅसने का दिनः आन्दे वोनेस्की की कविताएँ (अनुवाद) आदि इनकी रचनाएँ है ।

श्रीकान्त वर्मा की रचनाएँ भारतीय साहित्य में एक नई शुरुआत है । साठ-सत्तर के दशक में लिखी गई कविताओं ने हिन्दी कविता को पुनरुज्जीवन दिया 'जलसाघर' की कविताएँ उनकी पिछली कविताओं का उपसंहार कर हिन्दी कविता को एक और अन्दाज तथा एक और अर्थ प्रदान करती है।

अपने समय के कवियों में श्रीकान्त वर्मा का अन्दाज बिल्कुल अलग तरह का है जो अपने पाठकों को चमत्कृत करता है । उनकी कविताएँ भाषा को नंगा करती प्रतीकों चित्रों और मिथकों को एक दूसरे से विरुद्ध स्थापित कर नाटकीयता उत्पन्न करती है और मनुष्य के अन्तर्विरोधी संसार की बुनियादी त्रासदी को प्रस्तुत करती है ।

.

श्रीकान्त वर्मा हिन्दी के नायाब कवि थे जितना ध्यान उन पर जाना चाहिए था उतना नहीं गया। नई वे छोटे पड़ते थे। 1931 में बिलासपुर में पैदा हुए ये पत्रकार भी थे । 'दिनमान' साप्ताहिक पत्रिका दिल्ली में 10- 12 वर्षो तक काम किया । सत्ता के करीब होने पर उन्हे बहुत नुकसान उठाना पड़ा ।

राजनीति में रहकर अन्तर्विरोधों को प्रामाणिक प्रताल करने वाला 'मगध' को याद किया जाता **है** । उनका पहला काव्य - संग्रह **1957** में 'भटका - मेघ 'आया । जिसमे प्रकृति थी, कस्बा था, लोग थे, हमारे सामने आये । 'भटका - मेघ' में युवा कवि की रचनात्मकता कितने सघन व ताजगी लिए आता है ।

श्रीकान्त वर्मा का रचनाकार जीवन हिन्दी के कई अन्य प्रतिभाशाली कवियों की तरह बड़े शहरों की चकाचौध से

–

बढे बिलासपुर में उनकी शिक्षा -

दूर मध्य प्रदेश के छोटे से कस्बे बिलासपुर से शुरु हुआ। वे निम्नवर्गीय परिवेश में पले दीक्षा हुई और वही उन्होने कविता लिखना भी शुरू किया क्योंकि यही 'मुक्तिबोध' भी लिखे रहे थे और हरिशंकर परसाई भी ।

स्वाधीनता संग्राम की आँच अभी तक महसूस होती थी और उस दौर के प्रायः हर रचनाकार ने मार्क्सवाद से संबंध जरुर जोड़ा। प्रगतिवादी आन्दोलन का प्रभाव भी था । साहित्यिक मान्यताओं के तीब्र बाद- विवाद के स्वर गुँजते सुनाई दे रहे थे ।

श्रीकान्त वर्मा द्वारा नामवर सिंह को लिखे इस पत्र में देखा जा सकता है, "मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि इतिहास का दायित्व

. निरन्तर मेरा पीछा करती रहती है।" यह वाक्य श्रीकान्त वर्मा की रचनाकार दृष्टि को हम पर आज जितना **है** समझने के लिहाज से महत्वपूर्ण है । इतिहास के गुरुत्तर दायित्व के अहसास के साथ नितांत व्यक्तिगत संवेदनाएँ जुड़ी हुई है । इसीलिए

इसी पत्र में वे आगे लिखते है "जब कभी ऐसी रचना पढ़ता हूँ जिससे मानव - भावना और मानव-संघर्ष के गौरव को अभिव्यक्ति मिली है तो सहसा ही ऐसा लगता है- यही है जिसे वाणी देने के लिए मेरी कलम छटपटा रही **है** और मेरे ही एक

अंश को अभिव्यक्ति मिली है।"

--

श्रीकान्त वर्मा स्वयं मानव - यातना और मानव संघर्ष के गौरव की कविताएँ लिखना चाहते थे । श्रीकान्त वर्मा अपने युग और समाज को किस प्रकार देख रहे थे । वे लिखते है, "1960 के आस-पास मेरे चारों ओर मृत्यु की सिर्फ गरीबी, भूखमरी और असहायता से उत्पन्न मृत्यु नही बल्कि ऐसी मृत्यु जिसे सैकड़ो नामों से पुकारा जा सकता है, जैसे कि आत्मनिर्वासन, सामाजिक पलायन, प्रेम विफलता, मूल्यहीन संसार मे जाने का एहसास माननीय क्रूरता, करुणा विहिनता, चारो ओर 'मारो' या मार दिया गया का शोर । एक संवेदनशील व्यक्ति को जो चोटे लगती है उन सबका बयान इन पंक्तियों में पढ़ा जा सकता है। गरीबी, भूखमरी, असहायता के प्रमाण बड़ी संख्या में विपन्नता में मिल रहे लोगों की जिन्दगियों मे थे ।

श्रीकान्त वर्मा इस अभाव को वाणी देना चाहते थे। पहले कविता संग्रह 'भटका मेघ' की भूमिका में उन्होने उन साहित्यिक- प्रवृतियों पर आक्रामण किया है जो 'आज के साहित्य' को 'व्यक्तित्व की खोज' को परिभाषा करना चाहती है। एक आदमी का जीवन संघर्ष, उसके अंत और मनोपीड़ाएँ स्वयं में महाकाव्य की क्षमता रखती है। श्रीकान्त वर्मा की मान्यता थी कि दुःख, नैराश्य, कुटुता, घृणा तथा कुण्ठा के साथ जीवन में सौन्दर्य भी हैं, प्रेम और आस्था के स्वर भी है।

श्रीकान्त वर्मा ने अपने काव्य संग्रह की भूमिका में कहा है कि, "हर युग का प्रगतिशील साहित्य एक नऐ एवं जीवन्त व्यक्तित्व को स्थापित करता है । प्रश्न यह है कि आज की जीवन्त कविता में कौन सा व्यक्तित्व अभर रहा है**?** आज के जीवन्त मूल्य कौन से है ? ये मूल्य क्या अकेले एक व्यक्ति के है या सम्पूर्ण समाज के ? तारसप्तक का प्रकाशन हो चुका था सिर्फ 'राहों का अन्वेषी ' कहा था | श्रीकान्त वर्मा ने कहा कि सिर्फ राहो का अन्वेषी ' कह देने से काम नहीं चलता। वे

राहें कौन सी है? उनका अन्वेषण कैसे किया जा रहा है? क्या इस खोज के लिए कोई रोशनी जलाई गई है? राहों का अन्वेषण करने के लिए भी किसी मशाल की जरुरत होती हैं अन्धकार के खण्डहरों में भटककर 'चिमगादड़ के पंखो की फड़फड़ाहट को ही जीवन का एक मात्र चिन्ह मान लेना एक और बात है की खोज करना एक दूसरी बात । देखना कठिन नही कि अपनी ही कुण्ठाओं में घुलते रहने की जगह वे सामाजिक मुक्ति के प्रयासों में शामिल होने को रंचनाकार के दायित्व के रुप में चिन्हित करते है- पल की खोज का अर्थ आत्मा की मुक्ति नही, एक सामाजिक इकाई के रुप में मनुष्य के मुक्ति के मार्ग की खोज से है । इस लिए रचनाकार को ठोस वास्तविक शक्तियों के साथ एक संबंध भी बनाना पड़ता है।

श्रीकान्त वर्मा की इन साहित्यिक मान्यताओं का कुछ संबंध उनके अपने समय के और उन्ही के प्रदेश के मूर्धन्य मार्क्सवादी कवि गजानन माधव मुक्तिबोध के साथ उनकी निकटता से भी है। जैसा विद्वानों ने ठीक ही लक्ष्य किया है, यह संबंध सैद्धान्तिक स्तर पर भी था। मुक्तिबोध के नजदीक जाने पर उनके जीवन मूल्यों और साहित्यिक मूल्यों से स्वयं को असम्पृक्त रखना किसी भी ईमानदार व्यक्ति के लिए असम्भव था । श्रीकान्त वर्मा के साथ भी यही स्थिति थी । डॉ० नन्दकिशोर नवल ने श्रीकान्त वर्मा पर अपने निबंध में लिखा है, "मुक्तिबोध से प्रभावित होने का मतलब था नई कविता के अन्तर्विरोध को समझना और प्रगतिशील आलोचको की तरह नई कविता को नकार कर नही, बल्कि स्वीकार कर नई सृजनशीलता के धरातल पर प्रगतिशील कविता की रचना करना।" डॉ० नन्दकिशोर नवल ने अनुमान किया है कि नरेश मेहता के साथ नई दिल्ली से 'कृति' की शुरुआत के पीछे मुक्तिबोध की प्रेरणा काम कर रही होगी । प्रगतिशीलता की एक नई परिभाषा करने की कोशिश मुक्तिबोध कर रहे थे और उसमें वे साथी भी खोज रहे थे । श्रीकान्त वर्मा स्वयं को इन आरम्भिक वर्षो में वामपंथी मानते थे और यह बताना

चाहते थे कि सच्ची व्यक्तिगत स्वाधीनता की सही परिकल्पना उन जैसे कवियों के पास है, व्यक्तिगत स्वाधीनता का ढोल पीटने वाले व्यक्तिवादियों के बीच नही । यहाँ ये स्पष्टतः स्वयं को वैसे लेखकों से अलग करते हुए दिखते है जो साहित्य में तटस्थता के सिद्धान्त को प्रतिपादित कर रहे थे।' कृति' के दूसरे सम्पादक नरेश मेहता के तटस्थता एक सैद्धान्तिक स्वीकृति ' शीर्षक सम्पादकीय की

जिम्मेदारी लेने से इनकार करते हुए डॉ० नामवर सिंह को उन्होने पत्र लिखा, "राजनीति में तटस्थता का जो भी महत्व हो और है साहित्य में तटस्थता जैसी कोई चीज नही । असल में यह प्रश्न कमिटमेंट का है। आज प्रगतिशील लेखक संघ जैसी कोई चीज नही ।

..

श्रीकान्त वर्मा के 'भटका मेघ' से लेकर 'मगध' और 'गरुड़ किसने देखा है' तक की काव्य यात्रा से गुजरने पर उनके काव्य की राजनीतिक संवेदना को पहचानना कठिन नही है। लेकिन यह श्रीकान्त वर्मा की नितान्त निजी राजनीतिक संवेदना है । जो घरेलू अनुभवों, अभावो, पीड़ाओं, परिवारिक सफलताओ और असफलताओं के साथ इस तरह गुंथी हुई है कि यह फर्क करना कठिन है कि वह कितनी वैयक्तिक है और कितनी निर्वैयक्तिक निर्वैयक्तिकता उनके काव्य स्वभाव के अनुकूल न थीं ! 'भटका मेघ' का पहला संस्करण 1957 में प्राकशित हुआ था । उनके लगभग 25 साल बाद उसके दूसरे संस्करण की भूमिका में श्रीकान्त वर्मा ने लिखा 'भटका मेघ' की कविताएँ

. मुझे बहुत दूर की लगती है। लेकिन अब उन्हें गौर से पढता हूँ

दोहराता हूँ

F

तो वे अभी कल की **ही** बात लगती है- "मेरे घर की बात, मेरे घर के पीछे बहती नदी की बात, जंगलो

#

में गुजरे

मेरे बचपन की बात पहाड़ो के समक्ष अपने छुटपन की बात ।" 'भटका मेघ' और 'सरहद' की कविताएँ इसी पर रची गई इसलिए उनमें आशा और आस्था का एक सरल निर्दोष स्वर सुनाई पड़ता है।

भावभूमी

विजय

एक आलोचक ने लिखा है कि, " मुक्तिबोध ने यथार्थ को उसकी जरिलता के साथ आत्मसात कर मनुष्यता के अभियान में अपनी अखण्ड आस्था का परिचय दिया, वहाँ श्रीकान्त वर्मा ने सरल ढंग से

आशा और विश्वास से युक्त स्वर को अपनी कविता में अभिव्यक्त किया । यह कारण था कि मुक्तिबोध का जहाँ अपनी आस्था से मोहभंग नहीं हुआ वहाँ श्रीकान्त वर्मा जिन्दगी के यथार्थ का पहला झटका लगते ही दूसरे छोर पर आ पहुॅचे। उन्होने यह भी लिखा है कि श्रीकान्त वर्मा ने अपनी कविता में मानव यातना का चित्रण नही किया, मानव संघर्ष का भी चित्रण नही किया। ये निष्कर्ष थोड़ी जल्दबाजी से भरे हुए है क्योकि श्रीकान्त वर्मा की कविता मुक्तिबोध से भिन्न चरित्र की कविता है । दूसरे मुक्तिबोध पक्के तौर पर मार्क्सवादी थे, वे मार्क्सवाद द्वारा दी गई जो उनके समय प्रायः स्वीकृत थी, सामाजिक विकास क्रम की अवधारणा में विश्वास करते थे। श्रीकान्त वर्मा मोटे तौर पर वापपंथी रुझान के बावजूद मार्क्सवादी न थे और मनुष्य को सामाजिक इकाई मानने के बाद भी उनके सामने वह संगठित जनशक्ति स्पष्ट न थी जो कि उनके युग बन्धनों में जकड़े मनुष्य को पूँजीबाद अलगाव **और** उत्पीड़न से मुक्ति दिलाने का आश्वासन हो सकती थीं। "

अपने समय के कवियो में श्रीकान्त वर्मा का अन्दाज **बिल्कुल** अलग तरह का है जो अपने पाठकों को चमत्कृत करता है । श्रीकान्त वर्मा की रचनाएँ मनुष्य की लाचारी, असहायता, घमण्ड, करुणा, आत्मद्रोह को रेखांकित करती हुई मानवीय स्वतंत्रता के प्रश्न को उठाती है । समकालीन मनुष्य की नियति की परिभाषा के लिए वे ऐतिहासिक और पौराणिक प्रतीकों, घटनाओं और शर्तों का प्रयोग करती है।

श्रीकान्त वर्मा की रचनाएँ अपनी मौलिकता स्वकीयता और जातीयता के कारण न केवल अपने देश बल्कि यूरोप व अमेरिका के प्रबुद्ध पाठक वर्ग का ध्यान आकृष्ट किया और विदेशों में समकालीन भारतीय साहित्य को प्रतिष्ठा दी है।